ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(9): 96-100
www.allresearchjournal.com
Received: 11-07-2021
Accepted: 13-08-2021

Sandeep Kumar Yadav
Research Scholar
Education Department,
Ram Awadh Yadav Ganna Krishak PG College Takha Shahganj Jaunpur, Uttar Paradesh, India

Corresponding Author:
Sandeep Kumar Yadav
Research Scholar
Education Department,
Ram Awadh Yadav Ganna Krishak PG College Takha Shahganj Jaunpur, Uttar Paradesh, India

जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापनशीलता के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन

Sandeep Kumar Yadav

सारांश

शिक्षक समाज का दर्पण होता है तथा इस दर्पण को निखारने के लिए शिक्षा रूपी औषधि का प्रयोग आवश्यक होता है जिससे माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्रणाली की अहम भूमिका होती है माध्यमिक शिक्षा का शिक्षा के स्वरूप में महत्वपूर्ण स्थान होता है यह रीड की हड्डी के समान होती है। प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच में होते हुए भी इसके बिना समाज पंगु होता है। इसके माध्यम से देश के सामाजिक निर्माण तथा आर्थिक विकास में प्रभावशाली परिवर्तन होता है। अध्यापकों की भूमिका प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनके अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति पर निर्भर करती है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र में जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापनशीलता के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन है, जो प्राथमिक स्रोत पर आधारित है। इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शिक्षण अभिवृत्ति के लिए डॉ. एस .पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित अध्यापक अभिवृत्ति परिसूची प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। शोध में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के 100 अध्यापकों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया है।

शब्दावली: माध्यमिक विद्यालय, अध्यापक के प्रति अभिवृत्ति, सरकारी व गैर सरकारी आदि।

प्रस्तावना

अध्यापक विद्यालय की रीढ़ होता है इसका महत्व समाज और शिक्षा व्यवस्था दोनों में होता है किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता उस अध्यापक के व्यवहार, कार्यकुशलता और कार्यप्रणाली तथा योग्यता पर निर्भर करती है जो अपना सर्वस्व देने को तत्पर रहता है।

अध्यापक पर नई पीढ़ी को समाज के विषय में उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का उत्तरदायित्व होता है। शिक्षक सिर्फ संबंधित विषय का ज्ञान नहीं होता है बल्कि वह अपनी कर्मठ शीलता से छात्र के जीवन को अंधकार से प्रकाश की ओर लाने का कार्य भी करता है। अध्यापक के व्यक्तित्व का उसकी अभिवृत्ति, उसके मूल्य एवं अपने जीवन के प्रति उसकी अपनी अनुभूति का छात्रों के जीवन पर महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है कि अध्यापक अपने कर्तव्यों के प्रति कितना समर्पित है। अध्यापक अगर शिक्षण कार्य के प्रति समर्पित भाव से है तो इसका वाछिंत उद्देश्यो की प्राप्ति सरलता से की जा सकती है किसी भी कार्य को करने में मानव की अभिव्यक्ति का प्रमुख स्थान होता है यदि व्यक्ति की अभिवृद्धि सकारात्मक होती है तो वह परिणाम अच्छे प्राप्त होते हैं और यदि अभिवृत्ति नकारात्मक है तो निष्कर्ष अच्छे प्राप्त नहीं हो सकते हैं। मानव जो कार्य करता है उसके प्रति उसकी तीव्र सकारात्मक अभिवृत्ति उसके कार्य की गुणवत्ता को उच्च बना देती है इसके विपरीत नकारात्मक अभिवृद्धि उस कार्य की गुणवत्ता को निम्न बना देती है। यह शिक्षण के क्षेत्र में विशेष रुप से लागू होती है क्योंकि इसके द्वारा जीवन एवं समाज का निर्माण होता है।

इस अध्ययन में अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन इस आशा एवं विश्वास के साथ किया जा रहा है कि शोध के निष्कर्ष शिक्षण व्यवस्था के विभिन्न अभिकरणो के लिए उपयोगी होंगे।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

प्रस्तुत शोध पत्र में संबंधित साहित्य का अध्ययन करने से पता चलता है कि इसके पहले अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में पूर्व में काफी शोध कार्य किए गए हैं जो निम्न है। आर.पी. सिंह एवं एम.दास (1987) ने अपने शोध अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि पूर्व उच्चतर माध्यमिक तथा उत्तर उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों की सृजनात्मकता अध्यापन के प्रतिकूल अभिवृत्ति पाई गई है।

जी. रामचंद्रन (1991) ईस्वी ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किए कि दूरस्थ शिक्षा शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में संस्थागत शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन के प्रति अधिक अनुकूल अभिवृत्ति थी।

तपोधन (1991) ने अपने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया कि लिंग, क्षेत्र तथा जाति का व्यावसायिक अभिवृत्ति पर मुख्य प्रभाव पड़ता है जबकि योग्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

प्रस्तुत शोध पत्र में जौनपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापनशीलता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य

1. सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्ययन अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में अंतर ज्ञात करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के स्थाई अध्यापकों एवं अस्थाई अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में अंतर ज्ञात करना।
3. 3.माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की अध्ययन के प्रति अभिवृद्धि में अंतर ज्ञात करना।

परिकल्पना

1. सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के स्थाई अध्यापकों एवं अस्थाई अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

3. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओ की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने न्यादर्श के लिए कुल 100 अध्यापकों का चयन लॉटरी विधि से किया है जिसमें 50 अध्यापक सरकारी विद्यालय एवं 50 अध्यापक गैर सरकारी विद्यालय से चुने गए हैं। शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

उपकरण

शोधार्थी द्वारा डॉ. एस.पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति परिसूची (टी.ए.आई.) प्रश्नावली का प्रयोग किया गया और प्रदत्तो का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा t-test का प्रयोग किया गया है।

साख्यिकीय, विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या -01 सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन की प्रति अभिवृत्ति में अंतर।

विद्यालय के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी- मूल्य	सार्थकता स्तर (0.05)
सरकारी	50	250.74	28.84	1.91	सार्थक
गैर सरकारी	50	238.58	33.77		नहीं

df-98

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट होता है कि टी का मान 1.91 है। टी तालिका में 98 स्वतंत्रता के पर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक होने के लिए मान 1.98 होना चाहिए परंतु इस अध्ययन से प्राप्त मूल्य तालिका मूल्य से कम है। अर्थात सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना की सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन की प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या-02: माध्यमिक विद्यालयों के स्थाई अध्यापकों और अस्थाई अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति मे अंतर।

नियुक्ति के प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर 0.05 स्तर
स्थाई अध्यापक	42	247.81	32.28	0.86	सार्थक
अस्थाई अध्यापक	58	242.38	31.59		नहीं

df-98

तालिका संख्या- 02 से यह स्पष्ट होता है कि टी का मान 0.86 है। टी- तालिका में 98 स्वतंत्रता के चर पर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक होने के लिए मान 1.98 होना चाहिए परंतु इस अध्ययन से प्राप्त मूल्य तालिका मूल्य से कम है। अर्थात माध्यमिक विद्यालय के स्थाई अध्यापकों एवं अस्थाई अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, को 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत किया जाता है।

तालिका संख्या-03: माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का में अंतर।

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	की मूल्य	सार्थकता स्तर(0.05 स्तर)
अध्यापक	48	235.61	36.06	2.73	सार्थक
अध्यापिका	52	252.68	25.30		है

df-98

तालिका संख्या 03 से यह स्पष्ट होता है कि टी का मान 2.73 है। टी- तालिका में 98 स्वतंत्रता के चर पर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक होने के लिए मान 1.98 होना चाहिए। इस अध्ययन में प्राप्त मूल्य तालिका मूल्य से अधिक है। इसका अर्थ है कि माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। अतः शून्य परिकल्पना की माध्यमिक विद्यालयों की अध्यापकों एवं अध्यापिकाओ की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है, को 0.05 सार्थकता स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

1. सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। जिसका तात्पर्य है कि सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयो के अध्यापक अध्यापन के प्रति समान रूप से अभिवृत्ति रखते हैं तथा विद्यालय का सरकारी एवं गैर सरकारी क्षेत्र का होने से अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के स्थाई एवं अस्थाई अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है जिसका तात्पर्य है कि अध्यापकों में स्थाई एवं अस्थाई कार्य प्रकृति का भी अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है तथा वे एक समान रूप से अध्यापन के प्रति रुचि रखते हैं।3. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओ की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया है जिसका स्पष्ट तात्पर्य है कि माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति पर उनके महिला एवं पुरुष होने का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। इसका प्रमुख कारण महिला अध्यापिकाओं की अध्यापन के प्रति नैसर्गिक रुचि व अध्यापन व्यवसाय के प्रति समर्पण का भाव भी हो सकता है जबकि महिला अध्यापिकाओं की तुलना में पुरुष अध्यापकों में अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूचि देखने को कम ही मिलती है।

आगामी शोध हेतु सुझाव

1. इस शोधपत्र में केवल माध्यमिक स्तर का चुनाव किया गया है भावी शोध हेतु प्राथमिक क्षेत्र को भी चुना जा सकता है।
2. मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसायिक रूचि का अध्ययन किया जा सकता है।
3. महाविद्यालय स्तर के अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।
4. उच्च शिक्षा स्तर के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. अध्यापकों के व्यवसायिक तनाव की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. निजी विद्यालयों के अध्यापकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ

1. कपिल, एच. के. सांख्यिकी की मूल तत्व, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, 1988.
2. राव, एन.पी. माध्यमिक स्तर पर निष्पादित एवं शिक्षाकर्मी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन, मॉडर्न एजुकेशन रिसर्च इन इंडिया, 2009.
3. शुक्ला, श्रद्धा. पर्सनालिटी एज ए फेक्टर आफ इफैक्टिवनेस इंडियन, जर्नल आफ एजुकेशनल रिसर्च वा.21 अंक 1, 2002.
4. कुमार, पी. व मुथा, डी.एन. उपकरण टीचर इफैक्टिवनेस स्केल, 1955.
5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ 2015) नई दिल्ली, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद,
6. एटलस बर्गर एच. हैण्डबुक फार इनफॉरमेशन फॉर एजुकेशन एंड ट्रेनिंग, न्यूयॉर्क स्प्रिंगर 2002
7. आर. नटराजन (2001) स्कूल क्लाइमेंट एज जैव सर्टिफिकेशन आफ टीचर्स, जनरल ऑफ इंडियन एजुकेशन वॉल्यूम 27, अंक 2, एनसीईआरटी, न्यू दिल्ली,
8. शर्मा, आर. के. (2009) शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठ, आर लाल बुक डिपो,
9. सिंह, आर.पी. एवं दास, एम. (1989) एट्टीट्यूड आर टीचर टूवाई क्रियेटिव लर्निंग एंड टीचिंग इंडियन एजुकेशनल रिव्यू वॉल्यूम 24(2),
10. श्रीनिवासन, वी. (1992) पर्सनालिटी टेस्ट ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर्स दीयर एप्टीट्यूड टूवार्ड टीचिंग, फिफ्थ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च 1988 92।
11. पाठक, पी. डी (1974) भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं, आगरा,विनोद पुस्तक मंदिर.